रवीन्द्र जैन : एक संस्मरण

गायक,गीतकार, संगीतकार रवीन्द्र जैन 'दादू' को एक विलक्षण कलाकार के रूप में तो अनेक कार्यक्रमों में देखने और सुनने का अवसर मिला । वे जितने महान कलाकार थे उतने ही सरल और सादगीपूर्ण व्यक्तित्व के धनी थे । उनके व्यक्तित्व के इस पहलू को करीब से देखने का सौभाग्य मुझे तब मिला जब वे खरगोन में एक संस्था द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में आये थे। फिल्मी दुनिया के ग्लैमर और चकाचौंध से दूर उन्होंने आयोजकों से होटल के बजाय किसी जैन समाज के घर से अपने भोजन की व्यवस्था कराने का आग्रह किया । आयोजक मेरे पति के मित्र थे सो उन्होंने यह जिम्मेदारी हमें सौंप दी । समय पर भोजन बनाकर भिजवा दिया गया । किन्तु कुछ ऐसी परिस्थितियां निर्मित हुयी कि हमें अपने घर पर ही दादू के आतिथ्य सत्कार का सौभाग्य प्राप्त हो गया । मैंने स्वयं उन्हें भोजन परोसा और वे बड़े चाव से भोजन करते रहे । एक एक चीज को बड़े स्वाद से खाया और प्रशंसा की । एक पल के लिए भी उन्होंने हमें यह अहसास नहीं होने दिया कि वे कितने बड़े कलाकार हैं । आज उनके जाने के बाद वे पल हमारे जीवन के यादगार पल बन गये हैं ।– अनुपमा जैन

पाठकों की कलम से...

* संपादक मंडल को कोटिश: बधाईयाँ । **'प्रयास, रिश्तों को जोड़ने का...'** 2015 के प्रकाशन पर पत्रिका के समस्त पदाधिकारियों को बहुत बहुत बधाई एवं साधुवाद । प्रयास के प्रथम प्रकाशन में आप सभी ने बहुत ही अथक परिश्रम कर पत्रिका को इतना सुंदर, व्यवस्थित एवं कलात्मक रूप से प्रस्तुत कर सभी के मन को प्रसन्न कर दिया । पत्रिका को जिसने भी देखा सभी ने इसकी सराहना खुले दिल से की और आशा व्यक्त की, कि आगे के वर्षों में इसका प्रकाशन और अच्छे रूप से होगा । आगामी वर्ष में पत्रिका प्रकाशन के साथ सम्मेलन की योजना पर भी विचार किया जावे । सम्मेलन को भोपाल या इन्दौर में आयेजित किया जावे । जहां पर यातायात के पर्याप्त साधन उपलब्ध रहते है । हर दिशा से आसानी से पहुंचा जा सकता है । अंत में पुन: पुन: समस्त संपादक मंडल को बधाई। **– कन्छेदीलाल जैन, विदिशा**

* आपके द्वारा नव प्रकाशित पत्रिका **'प्रयास, रिश्तों को जोड़ने का...'** का अंक प्राप्त हुआ । पत्रिका अत्यंत व्यवस्थित एवं सुसज्जित है । हाथ में आने पर अपनेपन का अहसास कराती है । भविष्य में भी और अच्छा 'प्रयास' पत्रिका प्रयास करेगी, ऐसी आशा है । हमारी ओर से समस्त संचालक मंडल एवं प्रकाशन समिति को हार्दिक बधाई ।– **वीरेन्द्र जैन 'बांसीवाले', विदिशा**

* आज का समय 4 जी की दुनिया का है । हमारा समाज विवाह हेतु रिश्ते को ढूंढने में आज भी पुरानी पद्धतियों का उपयोग कर रहा हैं, जिसके कारण रिश्तों को खोजने और जोड़ने में हमारा कीमती वक्त जाया होता है फिर भी हमें योग्य पात्र की जानकारी आसानी से प्राप्त नहीं होती है। ऐसे विकट समय में आपने **'प्रयास, रिश्तों को जोड़ने का...'** पत्रिका का प्रकाशन करके पात्र चयन पद्धति को आसान बनाया है । ढ़ेर सारे बायोडाटा भारत के विभिन्न शहरों तथा गांव से एकत्रित करके एक माला में पिरोकर आपने पहाड़ जैसे मुश्किल काम को आसान किया है । मुझे आपका यह प्रयास बहुत ही सराहनीय लगा । मै आशा रखता हूं कि आने वाले भविष्य में आप इसी प्रकार के और भी प्रयास करेंगे । मैं समाजजनों से यह अनुरोध करुंगा कि इस प्रकार के प्रयास जिनमें हमें विवाह योग्य पात्र का चयन करने में आसानी होती है तो हमें इस प्रकार की प्रकाशित होने वाली पत्रिका में पूर्ण रूप से अपने परिवार के विवाह योग्य युवक तथा युवतियों के बायोडाटा प्रकाशन हेतु प्रदान करना चाहिए ताकि उचित जानकारी प्राप्त होकर सही दिशा में आगे बढ़ा जा सके । हमें नि:संकोच होकर बायोडाटा का प्रकाशन करवाना चाहिए । मैं आशा करता हूं कि यह पत्रिका उन सभी अभिभावकों के लिए एक उत्तम तोहफा है जो अपने पुत्र या पुत्री के विवाह के लिए इधर–उधर किसी से भी योग्य पात्र की जानकारी के लिए भटकते रहते हैं उन्हें प्रयास पत्रिका के माध्यम द्वारा उपयुक्त पात्र तो मिलेगा ही तथा वह अपना कीमती समय तथा धन भी बचेगा । मैं पुन: गोलालारीय दर्शन के संपादक मंडल एवं गोलालारीय समाज इन्दौर के सभी कार्यकर्ताओं का तथा देशभर के गोलालारीय दर्शन के सभी प्रतिनिधियों का हृदय से हार्दिक अभिनंदन करता हूँ जिन्होंने इस सुंदर कार्य को यथासंभव सफल बनाने में अपना अथक सहयोग दिया तथा आने वाले समय में इसी प्रकार के और प्रयास होते रहे ऐसी मंगल भावना रखता हूं । **– सत्येन्द्र जैन, अहमदाबाद**

* माह सितम्बर 2015 के महापर्व पर्यूषण पर्वाधिराज के समय पर पत्रिका में छपे लेखों ने मन को छू लिया है। ऐसे महत्वपूर्ण लेख हर समय सहज ही नहीं लिखे जाते है । जिनकी बहुत सरल भाषा हो और जो पाठक को सहज ही शीघ्र ही तुरंत ही दिमाग में उतर जाये । संलेखना–संथारा पर लिखा गया श्रीमती अर्चना जैन, इन्दौर का विस्तृत लेख जो कि जानकारियों की गहराईयो में समाया हुआ है । इतिहास–वर्तमान व भविष्य हेतु बहुत ही सारगर्भित जानकारी इस लेख को पढ़कर मिली । इसका धार्मिक महत्व किस तरह जरुरी है और संल्लेखना अपनाकर 'प्रार्थी' किस तरह खुद को सहज पाता है, समझ आया । जन्म उत्सव के साथ साथ मृत्यु महोत्सव को अपनाने–मनाने और इसमें डूब जाने की प्रेरणा देता यह लेख । त्याग करो – पुण्य कमाओं विषय का डॉ. कीर्ति जैन, खरगोन का लेख – पर्वाधिराज पर्यूषण पर्व के समय धर्मलाभ लेने के लिये समयाभाव के बाद भी, किस तरह कर्मो की निर्जरा कर पुण्य कमा लेने की बात को स्वाभाविक तौर से समझाने में सक्षम है । चतुर्मास के समय क्या करे क्या ना करे । जैन धर्मानुसार क्या अपनाए व क्या त्याग करे, ज्ञान आराधना करके दु:खो को कैसे टालना एवं अगले भव को अभी से किस तरह सफल करना आदि बातों को सरलता से समझाया यह लेख हम सभी के लिये महत्वपूर्ण व शिक्षाप्रद है । एक लेख और जो साधनाजी भोपाल द्वारा लिखित – 'धन बरसाने वाले मास–चातुर्मास' के द्वारा जिनवाणी के माध्यम से सीधे 'प्रभु' से जुड़ सकने की तीव्र इच्छाशक्ति के ठीक विपरीत ऐसे समय किस तरह 'कुबेर के खजाने' को समाजजन द्वारा आश्चर्यजनक तरीको से प्रदर्शित करने की होड़ की तरफ हमारा ध्यान खींचता है । उन्होंने समाज की एक बहुत ही 'दुखती रग' पर हाथ रखने की कोशिश भी की है। चातुर्मास के लिये कुछ साधुओं को स्थापना नारियल भी भेंट ना कर रुकने की सामाजिक कमी को स्पष्ट रुप से उकेरा है । लेखिका के स्पष्ट व साहसिक शब्दों का समाज को स्वागत करना चाहिए । गोलालारीय दर्शन के लेखकों/लेखिकाओं की भावनाओं और उनके सशक्त शब्दों को, जो कि समाज का दर्पण है – समझकर समाजजन को स्वीकार करना चाहिए । वे सभी लेखक लेखिकाये धन्यवाद के पात्र है जो समय समय पर समाज जन को अपने प्रेरक लेखो के माध्यम से समझाईश देते रहते है । हमारी अपनी समाज में इन्हें पाकर हम गर्व महसूस करते है। **– सिंघई ओमप्रकाश जैन, सुखलिया, इन्दौर**

* **''प्रयास, रिश्तों को जोड़ने का...''** के सुंदर प्रकाशन के लिए धन्यवाद । वर्तमान समय में जहां रिश्तों को जोड़ने के लिए अनेक प्रयास किये जा रहे हैं, वहीं कुछ तथाकथित सज्जन कहलाने वाले लोग विवाह संबंधों की आड़ में छल फरेब और धोखाधड़ी का व्यापार फैलाने में लगे हुये है । ये लोग विवाह के पश्चात वर पक्ष को ब्लेकमेल कर बदनाम करने के साथ ही डरा धमकाकर तलाक के लिये मजबूर करते हैं और विवाह जैसे पवित्र संबंध को दूषित और कलंकित करते हैं। आपसे निवेदन है कि ऐसे तथाकथित सज्जन लोगो का पर्दाफाश कर समाज को नष्ट होने से बचाने में अपना सहयोग दें । **– डॉ. कल्पना जैन, सिवनी मालवा**

अंत्यत हर्ष का विषय है कि हमारी गोलालारीय दर्शन समाचार पत्र नई ऊंचाईयों पर पहुंच रही है । आपसे नम्र निवेदन है कि जो शब्द जाल प्रतियोगिता है उसे सभी सही उत्तर देने वालों का नाम आप आगामी अंक में देंगे। ऐसा करने से सभी प्रतिभागियों का उत्साह तथा मनोबल बढ़ेगा, केवल मात्र पांच विजेताओं का नाम तथा फोटो छापना पर्याप्त नहीं है । हमें इसे प्रतियोगिता में प्रत्येक व्यक्ति को जोड़ना है । आपके पास कई उत्तर आते होंगे, जो प्रतिभागी बड़े उत्साह के साथ इस प्रतियोगिता में शामिल होकर कोरियर तथा पोस्ट द्वारा जवाब भेजते है उनकी लगन लगी रहे तथा मनोबल ऊंचा उठाने के लिए सभी सही उत्तर देने वालों का नाम आप प्रकाशित करेंगे । **– आकाश जैन, विदिशा**

– आपका यह सुझाव स्वागत योग्य है, हमने इसी अंक से सही उत्तर देने वाले प्रतिभागियों के नाम फोटो सहित प्रकाशित कर रहे है । – संपादक

विनम्र श्रद्धांजलि

श्रीमती निम्मीबाई जैन का देवलोकगमन जबलपुर में हो गया । श्रीमती निम्मीबाई बहुत ही मिलनसार, धार्मिक, मृदुभाषी एवं सरल स्वभावी महिला थी ।

श्री महेन्द्रकुमार जैन (बड़ा घरवालों) की 28 सितम्बर 2015 को अल्प बीमारी के दौरान मृत्यु हो गई । आप काफी सरल स्वभावी व शांतप्रिय व्यक्तित्व के धनी थे । आप अपने पीछे काफी भरा पूरा परिवार छोड़कर गये है । आपकी प्रबल इच्छा थी कि मेरी मृत्यु के बाद मेरे नत्रदान कर दिये जाये । उनकी इच्छा का परिवार ने पूरा ध्यान रखा व चेतना समिति, गंजबासौदा ने तुरंत नेत्रदान की व्यवस्था की । अब उनके नेत्रों से कई व्यक्तियों को रोशनी उपलब्ध हो रही है ।

श्री वीरेन्द्रकुमार जैन का देहांत 13 अक्टूबर 2015 को पवई, पन्ना में हो गया । आप धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के लिये सदैव अग्रसर रहकर कार्य करते थे ।

श्रीमती अंगूरीबाई जैन धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री फूलचंदजी शास्त्री का निधन अल्प बीमारी पश्चात 82 वर्ष की आयु में 16 अक्टूबर 2015 को इन्दौर में हो गया । आप अत्यंत ही सरल, धैर्यवान, धार्मिक व मिलनसार स्वभाव की महिला थी । आपकी स्मृति में आपके पुत्र श्री अभय जैन एवं आनंद जैन ने गोलालारीय समाज न्यास इन्दौर को 2500/–, न्यू देवास रोड मंदिर को 2500/– एवं गोलालारीय दर्शन पत्रिका को 2500/– प्रदान किये ।

श्रीमती विमलादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री पूरनचंदजी जैन का निधन अल्प बीमारी पश्चात 26 नवम्बर 2015 को इन्दौर में हो गया । आप धार्मिक एवं पारमार्थिक कार्यों में पूर्ण निष्ठा से योगदान प्रदान करती थी । सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़ चढ़कर भाग लेती थी । आपकी स्मृति में आपके पुत्र श्री दिनेशकुमार, कमलेश एवं शैलेष जैन ने गोलालारीय समाज न्यास इन्दौर को 2100 रु. एवं गोलालारीय दर्शन पत्रिका को 1100 रु. प्रदान किये ।

श्रीमती त्रिशला धर्मपत्नी हरिशचंद जैन का अल्प आयु में 3 दिसम्बर 2015 में घंसौर, सिवनी में निधन हो गया । आप धार्मिक एवं मिलनसार महिला थी ।